Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852
Received: 18-05-2026, Accepted: 18-06-2026, Published: 03-07-2026
Volume 7, Issue 3, 2026, Page No. 1-3

नियमित एवं दूरस्थ माध्यम से प्रशिक्षित शिक्षकों के आकांक्षा स्तर एवं शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. पल्लव पाण्डेय[1], दक्षा मेहता[2]

[1] शोध निर्देशक, शिक्षा संकाय, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, राजस्थान, भारत

[2] शोधार्थी, शिक्षा संकाय, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, राजस्थान, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य नियमित एवं पत्राचार/दूरस्थ माध्यम से प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों के आकांक्षा स्तर एवं शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन करना है। शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास की आधारशिला है और शिक्षक उसकी गुणवत्ता का प्रमुख निर्धारक होता है। शिक्षक का आकांक्षा स्तर उसकी उपलब्धि प्रेरणा, लक्ष्य निर्धारण एवं व्यावसायिक उन्नति की इच्छा को प्रदर्शित करता है, जबकि शिक्षण प्रभावशीलता उसके शिक्षण कौशल, कक्षा–प्रबंधन, संप्रेषण क्षमता एवं विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में योगदान को दर्शाती है।

इस अध्ययन में यह पाया गया कि नियमित माध्यम से प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक अपेक्षाकृत अधिक आकांक्षा स्तर एवं बेहतर शिक्षण प्रभावशीलता प्रदर्शित करते हैं, जबकि पत्राचार माध्यम से प्रशिक्षित शिक्षक भी शिक्षण कार्य में सक्षम होते हैं, परंतु उनमें व्यावहारिक अनुभव की अपेक्षाकृत कमी देखी जा सकती है। अध्ययन यह भी इंगित करता है कि शिक्षक–प्रशिक्षण की गुणवत्ता शिक्षण की प्रभावशीलता एवं व्यावसायिक विकास को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है।

मूल शब्दः शिक्षक–प्रशिक्षण, नियमित माध्यम, पत्राचार माध्यम, आकांक्षा स्तर, शिक्षण प्रभावशीलता, व्यावसायिक दक्षता, शिक्षक प्रदर्शन, शिक्षा मनोविज्ञान, कक्षा प्रबंधन, शैक्षिक गुणवत्ता

प्रस्तावना

शिक्षा शिक्ष् धातु से व्युत्पन्न शब्द है, जिसका अर्थ होता है ज्ञान की प्राप्ति। शिक्षा ही संपूर्ण राष्ट्र एवं किसी समाज के लिए विकास का मार्ग तैयार करती है। किसी भी राष्ट्र की समृद्धि व प्रगति उस देश के नागरिकों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षमताओं को निर्भर करता है। जब राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक शिक्षा एवं ज्ञान को प्राप्त करने लगता है तो उसका व्यक्तित्व श्रेष्ठतम गुणों से परिपूर्ण होकर मानव के आदर्श रूप में स्थापित हो जाता है। ऐसा शिक्षित नागरिक करणीय–अकरणीय, सत्य–असत्य, उचित–अनुचित में भेद करने योग्य बनता है जिससे वहां अपने व्यक्तित्व को श्रेष्ठ बनाता है और राष्ट्र को भी विकसित अनुशासित स्वावलंबी एवं समृद्ध बनाने में प्रभावी योगदान देता है।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार, "शिक्षा उस सन्निहित पूर्णता का प्रकाश है, जो मनुष्य में पहले से ही विद्यमान है; उन्होंने शिक्षा की रटने की विधि को अस्वीकार किया। उनके अनुसार शिक्षा का अर्थ केवल सूचनाओं को प्राप्त कर लेना ही नहीं है उन्होंने शिक्षा के संबंध में कहा कि, यदि शिक्षा का अर्थ मात्र सूचनाओं से होता तो पुस्तकालय विश्व के सबसे बड़े संत तथा विश्वकोश ऋषि बन जाते; स्वामी विवेकानंद के अनुसार हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जिनके द्वारा चरित्र का निर्माण हो मस्तिष्क की शक्ति बड़े बुद्धि का विकास हो और मनुष्य स्वावलंबी बने।"

शिक्षा के उद्देश्य

स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि मनुष्य के सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया है। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य के भीतर निहित शक्तियों को जागृत कर उसे आदर्श नागरिक बनाना है। स्वामी विवेकानंद द्वारा प्रतिपादित शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

- **अंतर्निहित पूर्णता को प्राप्त करना**

स्वामी विवेकानंद के अनुसार प्रत्येक मनुष्य के भीतर अपार शक्ति एवं पूर्णता विद्यमान होती है। शिक्षा का कार्य उस अंतर्निहित शक्ति को प्रकट करना है।

- **शारीरिक एवं मानसिक विकास**

शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति को शारीरिक रूप से स्वस्थ तथा मानसिक रूप से दृढ़ बनाए। स्वस्थ शरीर और सशक्त मन को उन्होंने जीवन की सफलता का आधार माना।

- **नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास**

शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक उन्नति नहीं, बल्कि नैतिक मूल्यों एवं आध्यात्मिक चेतना का विकास भी होना चाहिए, जिससे व्यक्ति सत्य, करुणा और आत्मानुशासन का पालन कर सके।

- **चरित्र निर्माण**

विवेकानंद ने चरित्र निर्माण को शिक्षा का सर्वोच्च लक्ष्य माना। उनके अनुसार वही शिक्षा सार्थक है जो मनुष्य में साहस, आत्मविश्वास, ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा उत्पन्न करे।

- **धार्मिक विकास**

उनका मत था कि शिक्षा व्यक्ति को धर्म के वास्तविक स्वरूप से परिचित कराए, जिससे उसमें सहिष्णुता, मानवता और आत्मिक शांति का विकास हो।

- **विभिन्नता में एकता की अनुभूति**

स्वामी विवेकानंद ने समस्त मानव जाति को एक मानते हुए शिक्षा के माध्यम से विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों और समाजों के बीच एकता एवं भाईचारे की भावना विकसित करने पर बल दिया।

शिक्षक प्रशिक्षण का सामान्य परिचय

शिक्षा किसी भी राष्ट्र की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक प्रगति का मूल आधार होती है तथा शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता का प्रत्यक्ष संबंध शिक्षकों की दक्षता, योग्यता एवं प्रशिक्षण से जुड़ा होता है। यदि शिक्षक प्रशिक्षित, संवेदनशील एवं व्यावसायिक दृष्टि से सक्षम होंगे, तभी शिक्षा का उद्देश्य प्रभावी रूप से पूर्ण किया जा सकेगा। इसी कारण शिक्षक–प्रशिक्षण को शिक्षा व्यवस्था का अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग माना गया है। शिक्षक–प्रशिक्षण वह संगठित एवं योजनाबद्ध प्रक्रिया है जिसके

माध्यम से भावी शिक्षकों में आवश्यक ज्ञान, शिक्षण–कौशल, दृष्टिकोण, मूल्य एवं व्यावसायिक दक्षताओं का विकास किया जाता है, ताकि वे शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली, विद्यार्थी–केन्द्रित एवं उद्देश्यपरक बना सकें। शिक्षक–प्रशिक्षण का उद्देश्य केवल विषय–विशेष का ज्ञान प्रदान करना नहीं होता, बल्कि शिक्षक को बालक की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं, सामाजिक परिस्थितियों, अधिगम की प्रक्रियाओं तथा विद्यालयी वातावरण की वास्तविकताओं से परिचित कराना भी होता है।

शोध समस्या में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा में शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम

प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा में शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम से आशय उन संगठित एवं मान्यता प्राप्त प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों से है, जिन्हें National Council for Teacher Education (राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्) तथा विभिन्न राज्य स्तरीय शिक्षा संस्थाओं एवं शिक्षा केन्द्रों द्वारा संचालित किया जाता है। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उद्देश्य कक्षा 1 से 12 तक के विद्यार्थियों को शिक्षण प्रदान करने वाले भावी शिक्षकों में आवश्यक ज्ञान, शिक्षण–कौशल, व्यावसायिक दक्षता एवं शिक्षकीय दृष्टिकोण का विकास करना होता है। ये कार्यक्रम सेवा–पूर्व प्रशिक्षण (Pre–Service Teacher Education) के अंतर्गत संचालित किए जाते हैं तथा सामान्यतः दो वर्षीय अवधि के होते हैं। प्रारम्भिक शिक्षा स्तर के लिए D.El.Ed-/STC तथा माध्यमिक शिक्षा स्तर के लिए B.Ed. जैसे पाठ्यक्रम संचालित किए जाते हैं, जिनके माध्यम से प्रशिक्षणार्थियों को बाल–मनोविज्ञान, अधिगम सिद्धांत, शिक्षण–विधियाँ, मूल्यांकन प्रणाली, कक्षा–प्रबंधन तथा विद्यालय–आधारित अनुभवों का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

आकांक्षा स्तर

आकांक्षा स्तर का सम्बन्ध जीवन में है। किसी भी प्रकार के लक्ष्य या मृत्य आदि की प्राप्ति की इच्छा कहलाती है तथा लक्ष्यों व मूल्यों को प्राप्त करने के प्रति व्यक्ति की इसकी स्तर कहलाता है। आकांक्षा स्तर से व्यक्ति के तात्कालिक लक्ष्य का संकेत मिलता है जिसे एक व्यक्ति प्राप्त करने के लिए प्रयास करता है। आइजनेक (1972) और उनके साथियों के अनुसार आकांक्षा स्तर वह सम्भावित लक्ष्य है जो एक व्यक्ति स्वयं अपने कार्य निश्पादन के समय निश्चित करता है। आकांक्षा स्तर को उसकी प्रकृति के कारण संज्ञानात्मक (Cognitive) अभिप्रेरणा कहा जाता है। प्रत्येक व्यक्ति में आकांक्षा स्तर मिन्न–भिन्न पाया जाता है। आकांक्षा और आकांक्षा स्तर व्यक्ति के जीयन निर्माण को प्रभावित करता है।

प्रत्येक व्यक्ति की अपनी–अपनी विशिष्टता होती है जिसके कारण उनकी रुचि अभिवृत्ति भी अलग–अलग होती है। एक प्रकार योग्यता रखने वाला व्यक्ति समाज से अलग–अलग प्रत्याशा करता है। उदाहरणार्थ विज्ञान वर्ग से स्नातक छात्र सैनिक सेवा तथा कुछ चिकित्सा सेवा व इंजीनियरिंग सेवा को सर्वोत्तम मानते है वहीं इसी वर्ग के छात्र प्रशासनिक सेवाओं को महत्व देते हैं। इस प्रकार व्यक्ति की अपनी विशिष्टता के कारण ही उनकी अभिवृत्ति में भी विशिष्टता देती है जिसके कारण उनकी पद प्राप्ति की इच्छा या अभिलाषा भी अलग–अलग होती है। व्यक्ति को इसकी प्राप्ति न होने की स्थिति में कुंठा का भाव सृजित होने लगता है जिससे कार्य परिलब्धि प्रभावित होने लगता है। साथ ही साथ कार्य संतोष का उसकी आकांक्षा स्तर से विशेष संबंध होता है। कक्षा में जिस छात्र की सीखने की जितनी अधिक आकांक्षा होती है वही उतनी भी शीघ्रता से सीख लेता है तथा जिसमें आकांक्षा कम होती है वहीं कम सीख पाता है। साथ ही साथ शिक्षक की आकांक्षा भी जितनी अधिक अपने कार्य के प्रति होगी उस की शिक्षण प्रभाविता उतनी ही अधिक होगी। आकांक्षायें मुख्यतः तीन प्रकार की होती है

1. **धनात्मक एवं ऋणात्मक आकांक्षा:** धनात्मक आकांक्षा वह है जो व्यक्ति को सफलता प्राप्ति की ओर उन्मुख करती है। ऋणात्मक आकांक्षा यह है, जिसमें व्यक्ति असफलता दूर करने का प्रयास करत्ता है।

2. **तत्कालिक एवं दूरगामी आकांक्षा:** तुरुन्त भविष्य (जैसे आज, कल, अगले सप्ताह या अगले माह) के लिये निर्धारित लक्ष्य तात्कालिक आकांक्षायें है। दूसरी ओर भविष्य (जैसे जब मैं बड़ा हूँगा या एक वर्ष बाद या पाँच वर्ष बाद) के लिये निर्धारित लक्ष्य दूरगामी आकांक्षाए है।

3. **वास्तविक एवं अवास्तविक आकांक्षायें:** वास्तविक आकांक्षा यह है जो व्यक्ति की योग्यताओं के अनुकूल होती है। दूसरी ओर अवास्तविक आकांक्षा स्तर यह है जो व्यक्ति की योग्यताओं से अधिक होती है या कम होती है।

शोध का उद्देश्य

उद्देश्य को पूर्व निर्धारित लक्ष्य होता है। व्यक्ति किसी भी कार्य को व्यवस्थित रूप से करने के लिए एक लक्ष्य का निर्धारण कर उसे प्राप्त करने का प्रयास करता है। यदि लक्ष्य स्पष्ट होता है तो व्यक्ति आसानी से अपनी मंजिल को प्राप्त कर लेता है। बिना उद्देश्य के कार्य करने पर व्यक्ति अपनी राह से भटक सकता है। उचित उद्देश्यों के आभाव में शोध कर्ता को अपने शोध को पूरा करने के लिए समस्यों का सामना करना पड़ सकता है। उद्देश्यों की स्पष्टता किसी कार्य को सरल व सफल बना देती है। अतः जीवन के सभी कार्य सोद्देशय होते है। किसी भी कार्य की सफलता उसके निश्चित उद्देश्य में छुपी होती है। व्यक्ति के प्रत्येक कार्य के पीछे कोई विशिष्ट उद्देश्य निहित होता है जो कार्य के सफलतापूर्वक संचालन में सहायक होता है। प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गए हैं।

1. नियमित प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों में आकांक्षा स्तर का अध्ययन।
2. पत्राचार द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों में आकांक्षा स्तर का अध्ययन।
3. नियमित प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों में शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन।
4. पत्राचार द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों में शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन।

शोध परिसीमन

समस्या के परिसीमन का अर्थ है समस्या की परिधि निर्धारित करना जिससे उचित तरीके से शोध कार्य सम्पन्न हो सके अर्थात् समस्या के सही विशिष्ट एवं वास्तविक अध्ययन के लिए समस्या का परिसीमन करना अत्यन्त आवश्यक है क्योकि प्रत्येक कार्य की कुछ सीमाए होती है तथा बिना परिसीमन के शोधकार्य अपने पथ से भटक सकता है। उस स्थिति मे शोधकर्ता अपने शोध के परिणाम एवं निष्कर्ष तक नहीं पहुँच पायेगा। इसलिए समस्या की निश्चित सीमा से गहनता से अध्ययन होगा। शोधकर्त्ता द्वारा शोधकार्य पर लगने वाले श्रम, धन या समय को कम करने की दृष्टि से समस्या का परिसीमन आवश्यक है। सीमित समय व साधनों के कारण अध्ययनार्थ निम्न परिसीमाओं को ध्यान में रखा गया है। प्रस्तुत शोधकार्य का परिसीमन भी धन, समय, साधनों की उपलब्धता व क्षमता के अनुसार निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत किया गया है। प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने समय एवं साधनों को ध्यान रखते हुए निम्नलिखित परिसीमन का निर्धारण किया है।

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित परिसीमाएं निर्धारित की गई है–

1. प्रस्तुत शोध कार्य दक्षिणी राजस्थान के उदयपुर संभाग के तक सीमित रखा गया है।
2. प्रस्तुत शोध कार्य नियमित एवं पत्राचार प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों तक सीमित रखा गया है।
3. प्रस्तुत शोध कार्य कक्षा 1 से 10 तक पढ़ाने वाले अध्यापको को समिलित किया गया है।

शोध अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन वर्णनात्मक एवं सर्वेक्षणात्मक अनुसंधान पद्धति पर आधारित है। वर्णनात्मक अनुसंधान का उद्देश्य वर्तमान परिस्थितियों, प्रक्रियाओं, विचारों, व्यवहारों तथा घटनाओं का व्यवस्थित अध्ययन एवं विश्लेषण करना होता है। John W. Best के अनुसार वर्णनात्मक अनुसंधान उन परिस्थितियों, संबंधों, प्रक्रियाओं एवं व्यवहारों का अध्ययन करता है जो वर्तमान में विद्यमान होते हैं। इसके अंतर्गत वर्तमान क्रियाओं, विश्वासों, अभिवृत्तियों तथा विकसित हो रही प्रवृत्तियों का तथ्यात्मक विश्लेषण किया जाता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के अंतर्गत शोधार्थी द्वारा अनुसंधान उपकरणों का निर्माण, न्यायादर्श का चयन, आँकड़ों का संकलन तथा सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग अनुसंधान की आवश्यकता एवं सर्वेक्षण पद्धति के अनुरूप किया गया है, जिसका विस्तृत विवरण आगामी अध्यायों में प्रस्तुत किया गया है।

प्रयुक्त शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आवश्यक तथ्यों, सूचनाओं एवं आंकड़ों के संकलन हेतु विभिन्न शोध उपकरणों का उपयोग किया गया। शोध की प्रकृति एवं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए मानकीकृत (Standardized) तथा शोधकर्ता द्वारा निर्मित (Self-Constructed) दोनों प्रकार के उपकरणों का प्रयोग किया गया, ताकि अध्ययन को अधिक विश्वसनीय, वैध एवं उद्देश्यपरक बनाया जा सके। इस अध्ययन में कुल तीन शोध उपकरणों का उपयोग किया गया, जिनमें दो मानकीकृत उपकरण तथा एक शोधकर्ता द्वारा निर्मित प्रश्नावली सम्मिलित है।

अध्ययन में प्रयुक्त विधि

किसी भी अनुसंधान कार्य की सफलता उसकी सुव्यवस्थित योजना एवं उपयुक्त अनुसंधान विधि पर निर्भर करती है। शिक्षा एवं मनोविज्ञान के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की अनुसंधान विधियों का प्रयोग किया जाता है। प्रत्येक शोधकर्ता अपने अध्ययन की प्रकृति, उद्देश्यों तथा समस्या के अनुसार ऐसी विधि का चयन करता है, जिससे अधिक विश्वसनीय, वस्तुनिष्ठ एवं प्रमाणिक परिणाम प्राप्त किए जा सकें। अनुसंधान कार्य की सफलता में प्रयुक्त विधि का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान होता है।

सन्दर्भ

1. अग्रवाल, जे. सी. (2009). शैक्षिक अनुसंधान का परिचय. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।
2. अग्रवाल, आर. एन. (2011). शिक्षा मनोविज्ञान. नई दिल्ली: आर. लाल बुक डिपो।
3. अवस्थी, आर. (2014). अनुसंधान पद्धति एवं सांख्यिकी. जयपुर: रावत पब्लिकेशन।
4. अंसारी, एम. ए. (2010). शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम. लखनऊ: भारतीय प्रकाशन।
5. भटनागर, आर. पी. (2008). आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान. मेरठ: सुर्या पब्लिकेशन।
6. बेस्ट, जॉन डब्ल्यू. (2005). अनुसंधान विधियाँ (अनु.). नई दिल्ली: प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया।
7. बुच, एम. बी. (2007). भारतीय शिक्षा में अनुसंधान सर्वेक्षण. नई दिल्ली: एन.सी.ई.आर.टी.।
8. चतुर्वेदी, एम. (2012). शिक्षा एवं समाज. जयपुर: आविष्कार पब्लिशर्स।
9. चौबे, एस. पी. (2013). शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी. इलाहाबाद: किताब महल।
10. दास, आर. सी. (2011). शिक्षा में अनुसंधान पद्धतियाँ. नई दिल्ली: डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस।